

श्री वृंदावन धाम को मंडल



॥ श्रीश्रीऽपद्मनाभे नमः ॥
॥ श्रीश्रीऽश्रीमदपद्मे नमः ॥

जे जे श्रीवृन्दावन रसिकन प्राण हैं ।
प्रभु-पद दाल सबनि, सरसिंह की खान हैं ॥
कैसौउ पापे करत, आनि जो वास है ।
दूर होत तत्काल तामु की वास है ॥
तात्काल वास जू जात, ताको होत निर्मल नात है ।
पावत महल की टाढन जई नित, सखचरिन को वास है ॥
दसरत जुगल छबै नैन अनुपम, करत गुन को वास है ।
जे जे श्रीवृन्दावन रसिकन प्राण हैं ॥ १ ॥

जे जे श्रीवृन्दावन, अति शोभा मई ।
पिय प्यारी को धाम, प्रेम विधि-निर्मई ॥
अद्वैत छटा विलोकि, हर्षनि सुख होत है ।
निर्गत जुगल किशोर, सु जनमग जोति है ॥
जोत जगमग होत, तिनकी कहा शोभा नाइये ।
दस-नौ चरन के चिन्ह, श्री यमुना-पुलिन में पाइये ॥
गावत मोर भरतन जिनकी, कलि कल नित नित नई ।
जे जे श्रीवृन्दावन, अति शोभा मई ॥ २ ॥

श्रीश्रीऽनंदमनोमयी श्रीवृन्दावन
श्रीश्रीऽपद्मनाभे नमः ॥ श्रीगुरु ॥
www.shrivatsaabhia.com

॥ श्रीगुरुदेवकी कृपासे ॥
॥ श्रीगुरुदेवकी कृपासे ॥

जै जै श्रीवृन्दावन कहा माहिमा कहौ ।
मोमाति एती नाहि, अन्त ताकी नाहौ ॥
शेष मोक्षा सुरेश, न पावत पार को ।
अज्ञ-मति हूँ बोलय, करत जु विचार को ॥
विचार को बोलय अज्ञ-मति, कहा गुन वरनन करै ।
अति दिव्य जटित मणीन भूमि गौं ध्यान केरी हो धरै ॥
निशि दिवस बरत विचार यह, आकाश फल कैसे लहौ ।
जै जै श्रीवृन्दावन कहा माहिमा कहौ ॥ ३ ॥

जै जै श्री वनराजहिं मस्तक नाइये ।
यही के परलप जुगल पद पाइये ॥
कार्तिक सुटि तेरस को जन्म जू जानिये ।
दुतिय प्रभु को रूप, सु ताकी मानिये ॥
मानि प्रभु को रूप ताकी, दिटप डीन बाज हीं ।
भानुजा के तीर दोऊ, स्याम स्याम राज हीं ॥
वृन्दावन हित रूप मंगल, रसिक जन सुखादाइये ।
जै जै श्री वनराजहिं मस्तक नाइये ॥ ४ ॥

श्रीगुरुदेवकी कृपासे ॥
श्रीगुरुदेवकी कृपासे ॥
www.shrivatsabhabha.com